International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(2): 01-03
www.educationjournal.info
Received: 14-04-2023
Accepted: 16-05-2023

उदय प्रताप राव
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी
प्राचार्य, ज्योत्सना शिक्षा महाविद्यालय, सीधी रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
उदय प्रताप राव
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला, विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन

उदय प्रताप राव एवं डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला, विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा के सभी विकासखण्डों से 04–04 विद्यालय अर्थात कुल 36 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा किया गया है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं उसके समकक्ष संस्थान के छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित संस्थाओं से 30–30 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1080 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्य सामान्य स्तर के है। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला, विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कुटशब्दः रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, जीवन मूल्य।

1. प्रस्तावना
शिक्षा मानव के विकास की आवश्यकता है, जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवन देश और समाज की गतिविधियों से अधूरा रह जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रियता खोकर पिछड़ेपन का शिकार हो जाता है। अतः शिक्षा ही वह सशक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन की प्रगति करते हुए सामाजिक व आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
शिक्षा के मूल्यों की समस्या प्रत्येक पग पर हमें मिलती है, मूल्य क्या है? यह प्रश्न अपने आप में मूल्यवान है, क्योंकि मूल्य का विचार मानव को स्वतः उस जीवन दृष्टि की ओर ले आता है जो यह देखती है कि जीवन के लिए किसका महत्व है। जो यह खोजती है कि व्यक्ति और समाज के लिए क्या कल्याणकारी है। इसलिए मूल्य को परिभाषित करना, दृष्टि को परिभाषित करने के समान ही दुष्कर कार्य है तथापि उसके कार्य व्यवहारों के आधार पर मूल्य के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है।
मनोवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मनुष्य की रुचियों, अभिवृत्तियों और पसन्दों के रूप में लिया है। फिलक महोदय के अनुसार हम जिन मापदण्डों को पसन्द करते हैं और महत्व देते हैं, और जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं वे ही हमारे लिए महत्व देते हैं, और जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं वे ही हमारे लिए मूल्य होते हैं। उनके शब्दों में– "मूल्य मानक रूपी मानदण्ड है जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं।"

2. अध्ययन की आवश्यकता
मूल्य शिक्षा हमारे अंदर नैतिक मूल्यों का विकास करती है। ये सीखने के साथ–साथ हमारे व्यक्तित्व में भी विकास करती है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक लॉरेंस कोहलबर्ग का मानना था कि बच्चों को एक ऐसे माहौल में रहने की जरूरत है जो दिन–प्रतिदिन के संघर्षों की खुली और सार्वजनिक चर्चा के लिए अनुमति देता है। टंसनम म्कनबंजपवद की महत्ता हमारे पर्सनालिटी डेवलपमेंट में सहायक है तथा विद्यार्थी के गुणों में विकास करता है। यह हमारे जीवन में अनुशासन के महत्व को भी बताता है। इतना ही नहीं यह हमारे अंदर समय के महत्व को समझने की क्षमता को विकसित करता है। खेल के महत्व को समझना, भी मूल्य शिक्षा को समझने तथा रोचक ढंग से व्यक्तित्व के विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है।

3. उद्देश्य
अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्य का अध्ययन।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला, विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्य सामान्य स्तर के है।
2. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कला, विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – गंगेव, हनुमना, जवा, मऊगंज, नईगढ़ी, रायपुर कर्चुलियान, रीवा, सिरमौर एवं त्योंथर हैं। जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं उसके समकक्ष व्यावसायिक संस्थान जो मध्यप्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त है, इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

5.1 समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत षोध अध्ययन में रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों का अध्ययन किया जाना व्यवहारिक दृश्टिकोण से संभव नहीं है। सीमित समय और सीमित व्यय में अधिक प्रयुक्त, त्रुटिहीन और विष्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए न्यादर्श का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा के सभी विकासखण्डों से 04–04 विद्यालय अर्थात कुल 36 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं उसके समकक्ष संस्थान ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा यह सभी संस्थान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हों। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं उसके समकक्ष संस्थान के छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करने के लिये न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 30–30 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1080 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ुद्वए`ण्क्ए बिपेुनंतम जमेजए ष्जष् जमेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

तथा छात्रों के अधिगम स्तर ज्ञात करने के लिए परीक्षाफल तथा स्वनिर्मित प्रश्नों के द्वारा परीक्षण किया गया है।

शोध समस्या में उपकरणों का चुनाव शोध की परिकल्पना की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होता है। आवश्यकता एवं सुविधा की दृष्टि से शुद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए मूल्य परीक्षण – डॉ. तारेख भाटिया एवं डॉ. एस.सी. शर्मा द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, जे. सी. (2010)[1], अंसारी, एम.एम. (1988)[2], मेहता, सी. (1970)[3], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[4], पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[5], पाण्डेय, आर.एस. (1997)[6], पाठक, पी.डी (2007)[7], सिंह एवं सिंह (2017)[8] एवं यादव एवं सिंह (2018)[9] ने शोध विधि एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत किए गए शैक्षिक व्यवस्थाओं से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्य संबंधी परिणाम

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	सार्थकता
जीवन मूल्य	1080	113.44	42.48	1.29	सार्थक नहीं

उपर्युक्त सारणी संख्या 1 को देखने पर शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का जीवन मूल्य स्तर का मध्यमान 113.44, मानक विचलन 42.48 है। गणना करने पर मध्यमान की मानक त्रुटि 1.29 प्राप्त हुयी है। एवं ज.जंइसम को देखने पर ज्ञात होता है, कि 1079 के स्वतंत्रता के अंश कण्ि ;1080.1द्ध पर सार्थकता के लिए मानक त्रुटि का आवश्यक मान 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर 1.96 एवं 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर 2.58 होता है। इस प्रकार गणनीय मानक त्रुटि का मान 1.29 है, इन दोनों मान (5 प्रतिशत पर 1.96 एवं 1 प्रतिशत पर 2.58) से बहुत कम है। अतएव ऐसी स्थिति में प्रतिदर्श ";उचसमद्ध

अपनी समष्टि ;च्वचनसंजपवदद्ध को प्रतिनिधित्व; त्मचतमेमदजद्ध कर रहा है और यह विश्वसनीय ;त्मसपंइसमद्ध भी है। इसलिए प्रस्तुत परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है अर्थात शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्य सामान्य स्तर के है।

सारणी 2: उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कला समूह, विज्ञान समूह एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन–मूल्यों संबंधी परिणाम

वर्ग अन्तराल	कला समूह प्राप्तांक	विज्ञान समूह प्राप्तांक	व्यावसायिक शिक्षा प्राप्तांक	कुल प्राप्तांक
0.10	20	10	5	35
10.20	28	12	25	65
20.30	12	42	30	84
30.40	60	73	42	175
40.50	76	82	35	193
50.60	85	90	80	255
60.70	58	66	33	157
70.80	66	30	20	116
कुल विद्यार्थी	Σf_1=405	Σf_2=405	Σf_3=270	1080

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला समूह, विज्ञान समूह एवं व्यावसायिक शिक्षा समूह के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन करने के लिए डॉ. नारेश भाटिया एवं डॉ. एस.सी. शर्मा द्वारा निर्मित 'मूल्य परीक्षण' का उपयोग किया गया है। उपरोक्त सारणी से स्पश्ट होता है कि –

1. कला समूह वर्ग के अंतर्गत 50–60 अन्तराल अर्थात 50 से 60 के बीच प्राप्तांकों में सर्वाधिक विद्यार्थी 85 है एवं सबसे कम 20–30 प्राप्तांकों के बीच 12 विद्यार्थी है।
2. विज्ञान समूह वर्ग के अंतर्गत 30–40 अन्तराल अर्थात 30 से 40 के बीच प्राप्तांकों में सर्वाधिक विद्यार्थी 156 है एवं सबसे कम 22 विद्यार्थी 0–10 अन्तराल अर्थात 0 से 10 प्राप्तांकों के बीच है।
3. व्यावसायिक शिक्षा समूह वर्ग के अंतर्गत 50–60 अन्तराल अर्थात 50 से 60 के बीच प्राप्तांकों में सर्वाधिक विद्यार्थी 80 है एवं सबसे कम 5 विद्यार्थी 0–10 अन्तराल अर्थात 0 से 10 प्राप्तांकों के बीच है।

उपर्युक्त जीवन मूल्यों के परिणाम उपरान्त सांख्यिकीय विष्लेशण करने पर –

Table 3: Summary: Analysis of Variance (Anova)

Source of variance	Sum of square	d.f.	Mean square variance	F'	(Results) 'p' value
Among Group	1518.74	2	759.37	1.037	Not significant
Within Group	15372.26	21	732.01		

d.f. (degree of freedom) (2, 21)
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 3.47
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.78
यहाँ पर Tab F0.05/F0.01 > Cal value (1.037)

उपरोक्त Anova-Summary में शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला, विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों से संबंधित परिणाम प्रदर्शित किए गए है। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृश्टिकोण से सार्थक अन्तर नहीं है। क्योंकि प्राप्त 'F' अनुपात का मान 1.037 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 एवं 0.01 स्तर के निर्धारित मान क्रमशः 3.47 एवं 5.78 से कम है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला, विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, जे.सी. (2010). डेवेलपमेंट ऑफ एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया, नई दिल्ली, शिप्रा पब्लिकेशन्स.
2. अंसारी, एम.एम. (1988). डिटरमाइनेट्स ऑफ कोस्ट्स इन डिस्टेंस एजुकेशन, इन कौल, बी.एन. सिंह, बी. एवं अंसारी एम.एम. स्टडीज इन डिस्टेंस एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.आई. यू. एवं इग्नू.
3. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
4. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
5. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
6. पाण्डेय, आर.एस. – 'एजूकेशन एस्टर डे एण्ड टुडे' (एक विश्लेषण) हॉरिजन पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1997.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह, डॉ.डी.एस. बघेल – किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2017 September;2(5):79-83.
9. यादव, विजय शंकर एवं सिंह, डॉ.डी.एस. बघेल – इलाहाबाद जिले में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का अध्ययन, International Journal of Advanced Educational Research. 2018 July;3(4):35-38.